International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार दर्शन में महिलाओं का स्थान

डा. सुनीता (सहायक आचार्य)

केन्द्रीय विश्वविधालय हिमाचल प्रदेश

सार- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का आधार शुद्व भारतीय दर्शन हैI जिसमें सम्पूर्ण मानव समाज के लिये एकात्म भाव हैI भारतीय दर्शन में राष्ट्र जीवन का कोई भी पहलू इस अखंडमंडलाकार ब्रह्माण्ड से बाहर और अलग नहीं हैI इसलिए भारतीय दर्शन में समाज के किसी भी पहलू सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक या महिला सशक्तिकरण का ही विषय क्यों न हो, की अलग से व्याख्या, भारतीय दर्शन के महान विद्वान दीनदयाल उपाध्याय द्वारा किया जाना बहुत कम संभव हैI दीनदयाल उपाध्याय का चिन्तन हिन्दू चिन्तन है, जिसमें महिलाओं का स्थान मातृशक्ति के रूप में है और एकात्ममानववाद में जब व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की बात होती है तो, व्यक्ति या मानव में (पुरुष और स्त्री) दोनों आते हैI दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के किसी एक वर्ग की अलग अस्तित्व के लिए कोई विचार या सूत्र नहीं दिया हैI दीनदयाल उपाध्याय के विचार दर्शन में अलग-अलग प्रसंगों में महिलाओं के हित, सम्मान, दायित्व और अधिकारों की चर्चा बेशक हुई है, जहाँ दीनदयाल उपाध्याय ने इस सम्बन्ध में विचार करना आवश्यक समझा, परन्तु अलग से महिला अधिकारों के लिए झंडा उठाकर कोई आन्दोलन नहीं कियाI क्योंकि वह सबके संकलित विकास का विचार करने वाले विद्वान थेI प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं प्रसंगों का अध्ययन किया गया है, जहाँ दीनदयाल उपाध्याय ने महिलाओं के हित के लिए अपने विचार रखेI

संकेत शब्द - एकात्म भाव, महिलाओं के हित, मातृशक्ति, भारतीय दर्शन, हिन्दू चिन्तनI

शोध पद्दति - प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित हैI इसमें विद्वानों के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय के महिलाओं के सम्बन्ध में अनेक प्रसंगों में व्यक्त किये गये विचार, की जो व्याख्या की गई है, उन विचारों का वर्णन कर उनका मूल्यांकन किया गया हैI इस तरह शोध पत्र (द्वितीय स्त्रोतों के) वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेष्णात्मक पद्दति पर आधारित हैI

शोध उद्देश्य -

1. भारतीय चिन्तन की अवधारणा को समझना I
2. दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन में महिलाओं सम्बन्धी विचार को भारतीय दृष्टिकोण से समझनाI

परिकल्पना - सामान्यतः यह धारणा है कि दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचार दर्शन में महिला अधिकारों और हितों सम्बन्धी कोई सूत्र नहीं दिया हैI दीनदयाल उपाध्याय द्वारा अनेक प्रसंगों में महिलाओं सम्बन्धी उनके दर्शन को समझा जा सकता हैI

भूमिका- दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में महिलाओं के अधिकार सम्बन्धी विषय को जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का आधार क्या हैI इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि महान दार्शनिक दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन का आधार मौलिक भारतीय चिन्तन या हिन्दू चिन्तन रहा हैI भारतीय चिन्तन की एक विशेषता है कि यहाँ समाज के किसी भी पहलू का अलग से चिन्तन नहीं होता, संकलित और सामूहिक का विचार यहाँ की विशेषता हैI 'जब हिन्दू चिन्तन की बात होती है तो हिन्दू चिन्तन (भारतीय चिन्तन) में महिलाओं का स्थान मातृशक्ति के रूप में हैंI मातृशक्ति कहते ही एक उदात्तता, एक अति उच्च स्थान की गरिमा प्रकट होती है, और इसलिये हमारे चिन्तन में हमने महिलाओं को माँ के स्थान पर समझा। पश्चिम के विचार में इसके बारे में जो-जो होता है वह केवल एक व्यक्ति के रूप में होता है। हमारे चिन्तन में हम उसको एकात्म रूप से देखते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "पुरुष और स्त्री का अस्तित्व कैसा है? एक पक्षी के दो पंखों जैसा है। एक पंख अगर घायल हो गया तो पक्षी उड़ नहीं सकता है।" इसमें सारे विषय आ जाते हैं आत्मसम्मान का, व्यवहार का, आदर सत्कार का, महिला की राष्ट्र जीवन और समाज जीवन में सहभागिता का। इसलिये हमारे यहाँ सांस्कृतिक मूल्यों को मातृशक्ति के रूप में जोड़ा गया है। जैसे हम हमारी मातृभूमि, भारत माता, वसुधा, जगजननी या जगदीश्वरी का उल्लेख करते है। इन सारे शब्दों को मिलाकर हम देखें तो उसमें एक उदात्तता है, एक उच्च भावना है। उस प्रकार की उदात्तता के कारण व्यवहार में भी एक पवित्रता उत्पन्न हो जाती है।'(मोहन राव भागवत, सुरेश जोशी, सुरेश सोनी, अनिरुद्ध देश पांडेय, पृष्ठ.91)

दीनदयाल उपाध्याय का चिन्तन भारतीय है, जिसमें एकात्म और समग्र विचार का स्थान सर्वोच्च हैI इसलिए दीनदयाल उपाध्याय समाज के किसी एक पहलू की अलग से विकास के लिए बहुत अधिक जुकाब नहीं रख सकते हैं, जहाँ आवश्यक हो वहीँ कहने का भाव रखते थेI इसलिए महिलाओं सम्बन्धी उनके विचार अलग- अलग प्रसंगों में ही मिलता हैI "हमारा जीवन दर्शन 'एकात्मता की अनुभूति' देने वाला दर्शन है। यह जीवन-दर्शन कोई एकांगी नहीं है। शरीर के सारे अवयव जैसे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। उनका अस्तित्व परस्पर अवलम्बी होता है, न उनमें स्पर्धा होती है, न प्रतियोगिता होती है। शरीर के अवयवों में जिस प्रकार की एकात्मता की भावना होती है, सुख-दुख की भावना होती है, अँगुली में चोट लग गई तो पूरे शरीर की अस्वस्थता उत्पन्न होती है। इसी प्रकार की एकात्मता की अनुभूति हमारे सारे जीवन में आती है। यानि जीवन-दर्शन खंडात्मक नहीं है।"(मोहन राव भागवत सुरेश जोशी सुरेश सोनी अनिरुद्ध देश पांडेय, पेज 92) बल्कि एकात्मक या एकात्म मानववाद पर आधारित हैI

'एकात्म मानववाद' का तात्पर्य है कि मनुष्य, समाज और प्रकृति को एक अभिन्न इकाई के रूप में देखा जाए। भारतीय परंपरा के अनुसार व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। समाज, परिवार, गाँव, शहर, राष्ट्र और विश्व की कड़ियों से जुड़ा हुआ है। इस दृष्टिकोण में व्यक्ति और समाज का सुख एक-दूसरे से अलग नहीं है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए व्यक्ति ईश्वर से जुड़ता है और स्वयं को तथा समस्त जगत को ईश्वर के अंश के रूप में देख पाता है।(डा संदीप कुमार पांडे, पेज 38)

दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में महिलाओं का स्थान -

जब दीनदयाल उपाध्याय के महिलाओं सम्बन्धी विचार की बात करते हैं, तो महिलाओं सम्बन्धी दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में अलग से कोई विस्तृत विवरण नहीं मिलताI दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन विशुद्व भारतीय दर्शन है, जो संकलित या एकात्ममानव दर्शन हैI जिसमें समाज के किसी भी पहलू का अलग से और टुकड़ों में विचार नहीं होता हैI

"एकात्म मानव दर्शन का अर्थ है मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के एकात्म संबंधों का दर्शन। यद्यपि यह सच है कि मानव-जीवन के विविध अंगोपांगो तथा मानव प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में विविधता होती है, किन्तु यह विविधता

आन्तरिक एकता के ही विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति हुआ करती है। इसीलिए इन सब में पारस्परिक अनुकूलता और पूरकता होती है। एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति-जीवन का भी उसके सभी अंगों को ध्यान में रखते हुए संकलित विचार करता है। मनुष्य प्राणी शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकलित रूप है। इसीलिए मानव का सर्वांगीण विचार उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा, सबका संकलित विचार है। व्यक्तित्व के इन चारों पक्षों की समुचित आवश्यकताओं को पूरा करने, उनकी विविध माँगों और इच्छा-आकाँक्षाओं को पूर्ण करने तथा उनका सर्वांगीण विकास करने के लिए भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति के सामने कर्त्तव्य के रूप में चार पुरुषार्थों का आदर्श रखा है। यहाँ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में उसकी भौतिक प्रगति के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति भी अभिप्रेत है जिससे समाज की सुयोग्य धारणा हो सके।" (विनायक वासुदेव नेने, पेज.5)

इस तरह भारतीय दर्शन में निहित मानव के सर्वागीण विकास में स्त्री और पुरुष दोनों का संकलित, सामूहिक और सर्वंगीण विकास हैI ऐसा नही हैं कि दीनदयाल उपाध्याय ने महिलाओं के अधिकारों और दायित्व के बारे में कुछ भी अलग से नहीं कहा है, जहाँ आवश्यकता हुई वहां उपाध्याय ने महिलाओं के अधिकार, दायित्व और सम्मान को स्थान दिया है I उपाध्याय ने अलग से महिला आन्दोलन, सशक्तिकरण की बात नहीं की है, क्योकि वह संकलित का विचार करते थे, एकात्ममानववाद की बात करते थेI दीनदयाल उपाध्याय जब जनसंघ के अध्यक्ष थे, तो उन्होंने महिलाओ के लिए राजनीतिक दायित्व निर्वहन की बात उन्होंने कीI इसके लिए जनसंघ में महिला शाखा के कार्य को उन्होंने आवश्यक माना तथा कहा कि, "राजनीति में पुरुषों की भाँति महिलाओं को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए। देश की रचना में उनका भी सहयोग मिलना चाहिए। परिवार के लिए परिवार-प्रमुख के कन्धे से कन्धा लगाकर कष्ट उठाने की भारतीय महिलाओं की परम्परा रही है। राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वालों ने महिलाओं, उनकी समस्याओं तथा उनकी शक्ति का विचार नहीं किया तो वह समाज के आधे भाग की उपेक्षा करने जैसा होगाI नवभारत की रचना में ऐसी उपेक्षा कदापि नहीं की जा सकतीI अतः उन्होंने जनसंघ का महिला मोर्चा स्थापित करने की ओर ध्यान दियाI जनसंघ के केवल रचनात्मक कार्यक्रमों में ही नहीं, अपितु आंदोलनात्मक कार्यक्रमों में भी महिला-मोर्चे का सहयोग बहुत बड़ा रहा है।(भालचंद्र कृष्णाजी केलकर, पृष्ठ 93) परिवार में पुरुष के साथ महिलाओं के योगदान को बराबर का मानते हुए दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक क्षेत्र और नवभारत निर्माण में महिलाओं की हो रही उपेक्षा को अनुभव कियाI यही कारण था कि दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ में महिला मोर्चा स्थापित करने की बात कीI दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ में महिलाओं के केवल रचनात्मक कार्यों की बात ही नहीं की है, बल्कि आंदोलनात्मक दृष्टि से भी इतिहास में महिलाओं के योगदान को मानाI

दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में भी सामूहिक योगदान की पैरवी करते थेI इसलिए, 'भारतीय जनसंघ का संविधान अनुच्छेद-9 मंडल समितियाँ" (2) मंडल समिति अधिकतम 21 सदस्यों की होगी जिसमें उपर्युक्त निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त शेष की नियुक्ति प्रधान द्वारा होगी। प्रत्येक मंडल समिति में दो स्थान महिला तथा दो स्थान अनुसूचित जाति-जनजाति सदस्यों के लिए सुरक्षित रखे जाएँगे। भारतीय जनसंघ. घोषणाएँ व प्रस्ताव, 1951-1972, भाग-1: भारतीय जनसंघ, विठ्ठल भाई पटेलभवन, नई दिल्ली, पृ. 187 तथा पाञ्चजन्य; 21 नवंबर, 1966, पृष्ठ. 10 (महेश चन्द्र शर्मा, पृष्ठ 296)

यहाँ महिलाओं को उनके राजनीतिक दायित्व से जोड़ने के लिए दीनदयाल उपाध्याय ने उनके लिए दो स्थान सुरक्षित रखने की पैरवी की हैI दीनदयाल उपाध्याय महिलाओं को केवल पारिवारिक दायित्व तक सीमित नहीं रखना चाहते थेI समाज और राष्ट्र के प्रत्येक कार्य में महिलाओं की भागीदारी के वह कभी विरोधी नहीं रहेI पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करने वाली महिलाओं के लिए भी दीनदयाल उपाध्याय के हृदय बहुत सम्मान और स्नेह रखते थेI यहाँ एक प्रसंग दीनदयाल उपाध्याय की मुहं बोली बहन सावित्री वर्मा से सम्बन्धित हैI

श्री मानसिंह वर्मा जनसंघ की स्थापना के समय से दल के कार्यकर्ता थे, आज़ादी के बाद जब देश में 1952 का प्रथम आम चुनाव हो रहा थाI उस समय उन्हें चुनाव लड़ने का आदेश दिया गयाI मानसिंह वर्मा को चुनाव लड़ने का यह आदेश दीनदयाल उपाध्याय और नानाजी देशमुख ने दिया था। उस समय मानसिंह वर्मा के घर की स्थिति चुनावी मैदान में उतरने के लिए अनुकूल नहीं थी, उनके घर में चार छोटे-छोटे बच्चे थे और उनकी पत्नी बीमार रहती थी।परन्तु फिर भी दल का आदेश सिर-आँखों पर रखकर मानसिंह जी चुनाव के मैदान में उतरे, और इसी बीच उनकी पत्नी का देहांत हो गयाI

दीनदयाल उपाध्याय का किसी कार्यकर्ता से सम्बन्ध मात्र राजनीतिक नहीं था, बल्कि पारिवारिक भी थाI मानसिंह जी के घर आया यह संकट केवल उनका नहीं था, इसलिए चुनाव के बाद नानाजी देशमुख और दीनदयाल उपाध्याय ने योग्य बधू ढूँढ कर उनका पुनर्विवाह करवा दियाI मानसिंह वर्मा की पत्नी को दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी बहन माना और सदैव उनका सम्मान किया तथा उनका हलचल भी पूछते रहते थेI एक घटना तब की है, जब वह दल के कार्यों में व्यस्त रहते थेI इस सम्बन्ध में मानसिंह की पत्नी कहती हैं कि "एक दिन की बात है, रात के एक बजे हमारे दरवाजे पर लगी घंटी बज उठी। वर्मा जी द्वार खोलने गये और देखा कि चार-पाँच कार्यकर्ताओं को साथ लिये दीनदयाल जी खड़े हैं। वास्तव में वे नगर में थे तो दिन भर से, किंतु आये नहीं इसलिए मुझे बुरा लग रहा था। उन्हें देखते ही मैं हर्ष से फूली न समायी। किंतु उन्हें कितने कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, इसका विचार आकर दुःख भी हुआ। मैंने कहा, 'पंडित जी रात का एक बज चुका है और आप अभी तक घूम ही रहे हैं। विश्राम कब करिएगा? तड़के उठकर आपको अगली गाड़ी भी तो पकड़नी है न?' पंडित जी ने कहा 'विश्राम की बात क्यों ले बैठी हो? रहने भी दो। किंतु यह तुमने कैसे सोच लिया कि बहिन से मिले बिना मैं यहाँ से चला जाऊंगा? दिनभर तो एक मिनट का भी समय नहीं मिल पाया, इसलिए सोचा, जाते-जाते कम से कम भेंट तो कर ही आऊँ। इसीलिए आ गया।' उनका ऐसा ममत्व देखकर मेरी आँखें छलछला आयीं। देखकर वे बोले, 'यह क्या पगला रही हो? रोने-धोने की क्या बात है? अच्छा, बताओ तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? बच्चों का क्या हाल है? और बहिन, कुछ दुबली नजर आ रही हो? क्या कष्ट है?' 'साहस कर मैंने कहा- 'मुझे क्या होना-जाना है। आप और नानाजी जैसे भाई चिंता करने के लिए हों तो मुझे भला क्यों कर कोई कष्ट रहेगा?'मुझे बीच में ही रोककर बोले भी आता है। अच्छा, अब खिलाने-पिलाने का विचार भी है।' 'अजी वाह! तो तुम्हें बातें बनाना बतियाती ही रहोगी या हमें कुछ 'इतनी देर रात मेरे यहाँ आकर अधिकारपूर्वक मुझसे चाय माँगने वाले मेरे भाई अब नहीं रहे, इसका दुख उनकी याद आते ही मन में उभर आता है।'(विशवनाथ नारायण देवधर, पृष्ठ.2-3) इस प्रसंग में दीनदयाल उपाध्याय का महिलाओं की भावनाओं के प्रति सम्मान परिलक्षित होता हैI ऐसा ही वाक्य उनकी ममेरी बहन रमा देवी से सम्बन्धित है, तब दीनदयाल उपाध्याय अपनी शिक्षा को बीच में ही छोडकर उनकी सेवा में लग गये थेI

भारतीय जनसंघ यद्यपि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राजनीतिक शाखा हैI राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में महिलाओं का प्रवेश नहीं हैI इसमें महिलाओं की अलग शाखा सेविका समिति हैI परन्तु दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ में महिला शाखा को स्थान और सम्मान दियाI दीनदयाल उपाध्याय महिला अधिकारों और सशक्तिकरण के विरोधी नहीं थे, वह महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में सम्मान और अधिकार देने के पक्षधर थे, इस सम्बन्ध में यह प्रसंग महत्वपूर्ण है I "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में हालाँकि महिलाओं को प्रवेश नहीं है, न ही वैदिक मतों में महिला के संन्यास की व्यवस्था है; लेकिन ऐतिहासिक तथ्य के आधार पर दीनदयाल उपाध्याय मंडन मिश्र की पत्नी से महिला के अधिकारों का वर्णन करवाते हुए उसे शास्त्रार्थ का अधिकार देकर, अंत में उसे संन्यास ग्रहण करवा देते हैं। इस प्रसंग में, महिला अधिकारों के लिए भारती तर्क देती है: "स्त्री हूँ तो क्या हुआ आचार्य ? स्त्री के क्या विचार नहीं होते? उसके मन में क्या शंकाओं-कुशंकाओं की आँधी नहीं उठ सकती? उसके पास भी मस्तिष्क है, हृदय है और फिर वह भी तो

राष्ट्र का अंग है। उसका भी राष्ट्र के प्रति दायित्व है और उस दायित्व को निभाने का उसको भी अधिकार है और आचार्य, स्त्रियों के साथ क्या शास्त्रार्थ नहीं हुए हैं? गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद आपको ज्ञात नहीं है? गार्गी क्या पुरुष थी? और उसका शास्त्रार्थ भी किसी साधारण विषय पर नहीं किंतु आत्मा के संबंध में हुआ था। जनक और सुलभा का शास्त्रार्थ तो प्रसिद्ध ही है। सुलभा भी कोई पुरुष नहीं थी। जनक और याज्ञवल्क्य भी कोई साधारण मनुष्य नहीं थे किंतु अत्यंत प्रसिद्ध महात्मा थे। यदि ये महात्मागण स्त्रियों से विवाद कर सकते हैं तो आप मुझसे क्यों नहीं कर सकते? (महेश चन्द्र शर्मा, पृष्ठ.38)

इस प्रसंग से स्पष्ट है कि दीनदयाल उपाध्याय ने मण्डन मिश्रा की पत्नी को आधार बनाकर भारतीय महिलाओं के विचार, अधिकार, मस्तिष्क, ह्रदय, शास्त्रार्थ और संवाद क्षमता को समाज के सदृश किया हैI इसी कारण उन्होंने इस प्रसंग को अपने विचारों में विशेष स्थान दियाI दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र और समाज के मार्गदर्शन तथा स्व से साक्षात्कार के लिए जो छोटे- छोटे सूत्र दे गये, उनमें ही सम्पूर्ण सनातन भारतीय दर्शन हैI इस प्रसंग में दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय महिलाओं में निहित प्रत्येक पहलू सम्बन्धी क्षमता को उजागर किया हैI

दीनदयाल उपाध्याय के ह्रदय में सामान्य जन के लिए विशेष स्थान था और वह उनके दर्द को अनुभव कर सकते थेI इस सम्बन्ध में यह एक और प्रसंग महिलाओं से सम्बन्धित है I "यह प्रसंग श्री यज्ञदत्त शर्मा का उस समय का है जब वे पंडितजी के साथ रेल द्वारा किसी कार्यवश जा रहे थे। श्री यज्ञदत्त जी ने लिखा है कि एक बार वे दीनदयाल जी के साथ रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे। जिस डिब्बे में वे यात्रा कर रहे थे, उसी डिब्बे में भीख माँगने वाली दो महिलाएँ चढ़ीं। साथ में दो पुलिस वाले भी चढ़े। उनमें से एक ने उन महिलाओं को डाँटा और दूसरा डंडे से उनकी पिटाई करने लगा। यह देखकर दीनदयाल जी से रहा नहीं गया और पुलिस वाले के पास जाकर उन्होंने उसका हाथ रोकते हुए कहा- "इन बेचारियों को क्यों मार रहे हो? यह उचित नहीं है।" तो पुलिसवाला बोला-"ये चोरियाँ करती हैं, उसके कारण आप जैसे यात्रियों को ही कष्ट होता है। आप चुपचाप अपने स्थान पर जाकर बैठ जाइए और मुझे मेरा कार्य करने दीजिए।" यह सुनकर पंडितजी को बहुत क्रोध आया और वे बोले- "ये महिलाएँ अपराधी हों तो न्यायाधीश उन्हें दंड देगा। इनकी इस प्रकार अमानवीय पिटाई करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।" यह कहकर उन्होंने उस पुलिसवाले का हाथ पकड़ लिया। तब जाकर पुलिसवाले को उन्हें छोड़ना पड़ा। यज्ञदत्त जी ने आगे लिखा है कि 'हम लोग इतने वर्षों से साथ काम कर रहे हैं लेकिन पंडितजी का इस प्रकार भयानक रूप से क्रोधित होना मैंने पहली बार देखा था। साधारण-सी महिलाओं के लिए उनके दिल में इतना दर्द।' (हरीश शर्मा, पेज 106) यह प्रसंग केवल महिलाओं पर हो रहे गलत व्यवहार को ही नहीं इंगित करता, बल्कि दीनदयाल उपाध्याय समाज के प्रत्येक मानवी के उपर अमानवीय और असंवैधानिक कृत्य को सहन नहीं कर सकते थेI महिलाओं पर पुलिस द्वारा अवैधानिक तरीके से पिटाई और अभद्र व्यवहार भी उनके क्रोधित होने का एक कारण थाI

दीनदयाल उपाध्याय ने अपना एकात्ममानववाद का सिद्धांत इस उद्देश्य से प्रस्तुत किया कि आधुनिक समाज में जो गहरे भेदभाव और असमानताएँ पैदा हो चुकी है उन्हें दूर किया जा सके। उनका मानना था कि केवल पूँजीवाद और समाजवाद जैसे विकल्पों से समाज का उद्धार नहीं हो सकता। ये दोनों प्रणालियाँ मनुष्य के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए नहीं बनाई गई थीं। पूँजीवाद जहाँ धन और व्यक्तिगत स्वार्थ को प्रमुखता देता है, वहीं समाजवाद केवल सरकारी नियंत्रण और समानता की बात करता है, जिससे व्यक्ति की स्वायत्तता और प्राकृतिक अधिकारों का उल्लंघन होता है। एकात्म मानववाद इस दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इसमें व्यक्ति की सामाजिक जिम्मेदारी, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध को प्राथमिकता दी जाती है। यह विचारधारा समग्र विकास के लिए हर व्यक्ति, समाज और पर्यावरण के हित में कार्य करने की आवश्यकता को महसूस कराती है।

एकात्म मानववाद इस विचारधारा की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- जो व्यक्ति (पुरुष और महिला) के सम्मान और हितों में सामंजस्य की बात करता है I "एकात्म मानववाद में स्वतंत्रता और समानता के बीच सामंजस्य स्थापित करने की बात की गई है। दीनदयाल उपाध्याय ने यह माना कि स्वतंत्रता का सही अर्थ तब है जब समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर मिलें। कोई भी व्यक्ति भेदभाव या शोषण से मुक्त होकर अपने अधिकारों का उपयोग कर सके और सभी को समान अवसर प्राप्त हो, तब ही वास्तविक स्वतंत्रता और समानता का पालन किया जा सकता है। एकात्म मानववाद में व्यक्ति और समाज के बीच पूरकता का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है। इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति का भला समाज के भले से जुड़ा हुआ है और समाज का उत्थान व्यक्ति के व्यक्तिगत उन्नति से संबंधित है। दीनदयाल उपाध्याय ने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी समाज का विकास तभी संभव है जब हर व्यक्ति का विकास हो और हर व्यक्ति अपने समाज के लिए जिम्मेदार बने।" (डा संदीप कुमार पांडे, पेज 38-39) यहाँ हर व्यक्ति में पुरुष के साथ महिला की भी बात शामिल हैI

दीनदयाल उपाध्याय ने जहाँ एकात्ममानववाद में समग्र के हितों की संकलित बात की है वहीँ अपने अन्तोदय की धारणा में अभावग्रस्त, विकास की पहुँच से दूर, माता-पिता के अपने बच्चों के भविष्य को लेकर सपनों तक, विकास को पहुँचाने की बात की हैI उस अंतिम समाज की महिलाएं जो अपने बच्चों के भविष्य के लिए अभावग्रस्त जीवन जी रही हैं, उनके नंगे पैरों के घाव को भरने की बात करते हैंI यह महिलाओं का परिवार और समाज के लिए त्याग ही है, जिसके लिए वह स्वयं अभावों में जीती हैं, और अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हैI घर में भोजन भी स्वयं के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्यों को ध्यान में रखकर बनाती हैI ऐसा विचार केवल भारतीय महिलाएं ही करती हैंI दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के अनुसार,"आर्थिक योजनाओं तथा प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे व्यक्ति से नहीं, बल्कि सबसे नीचे के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा। आज देश में ऐसे करोड़ों मानव हैं, जो मानव के किसी भी अधिकार का उपभोग नहीं कर पाते। शासन के नियम और व्यवस्थाएँ, योजनाएँ और नीतियाँ, प्रशासन का व्यवहार और भावना इनको अपनी परिधि में लेकर नहीं चलती, प्रत्युत् उन्हें मार्ग का रोड़ा ही समझा जाता है। हमारी भावना और सिद्धांत है कि वह मैले-कुचैले, अनपढ़, मूर्ख लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है। जिस दिन इनको पक्के, सुंदर, स्वच्छ घर बनाकर देंगे, जिस दिन हम इनके बच्चों और स्त्रियों को शिक्षा और जीवन-दर्शन का ज्ञान देंगे, जिस दिन हम इनके हाथ और पाँव की बिवाइयों को भरेंगे और जिस दिन इनको उद्योगों और धंधों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊँचा उठा देंगे, उस दिन हमारा भ्रातृभाव व्यक्त होगा। ग्रामों में जहाँ समय अचल खड़ा है, जहाँ माता और पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने में असमर्थ है, वहाँ जब तक हम आशा और पुरुषार्थ का संदेश नहीं पहुँचा पाएँगे, तब तक हम राष्ट्र के चैतन्य को जागृत नहीं कर सकेंगे। हमारी श्रद्धा का केंद्र आराध्य और उपास्य, हमारे पराक्रम और प्रयत्न का उपकरण तथा उपलब्धियों का मानदंड वह मानव होगा जो आज शब्दशः अनिकेत और अपरिग्रही है।"(अमरजीत सिंह, पृष्ठ, 57)

यहाँ दीनदयाल उपाध्याय ने महिलाओं के लिए शिक्षा की बात की, एक माता के रूप में एक महिला के अपने बच्चों के भविष्य को लेकर जो सपने हैं, उसकी बात की हैI यहाँ भारतीय महिलाओं के ममत्व, अपनत्व, सहनशीलता और त्याग की भावना परिलक्षित होती है, जो अपने स्वयं के लिए नहीं, परिवार और समाज के लिए सोचती हैI यहाँ दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारतीय महिलाओं को राष्ट्र संस्कृति और समग्र के हित को पोषित करने वाली शक्ति के रूप में दिखाया हैI

दीनदयाल उपाध्याय ने सदा ही अपने विचारों के माध्यम से समाज का विचार कर आगे बढ़ने को कहा हैI वह जन्म, जननी और सम्पूर्ण समाज के द्वारा निभाए जाने वाले दायित्व धर्म के उपासक थे, उन्होंने कहा, "जो भाषा मैं प्रयोग

कर रहा हूँ, वह मेरी नहीं, मुझे किसी ने दी है। इसे मातृभाषा कहते हैं, क्योंकि सबसे पहले माँ ही भाषा सिखाती है। परंतु माँ अकेले नहीं है, समाज भी है। राष्ट्र के गौरव में ही हमारा गौरव है। परंतु आदमी जब इस सामूहिक भाव को भूलकर अलग-अलग व्यक्तिगत धरातल पर सोचता है तो उससे नुकसान होता है। जब हम सामूहिक रूप से अपना-अपना काम करके राष्ट्र की चिंता करेंगे तो सबकी व्यवस्था हो जाएगी। यह मूलभूत बात हैI (अमरजीत सिंह, पृष्ठ, 109) यहाँ दीनदयाल उपाध्याय ने एक बच्चे की प्रथम शिक्षिका माँ को और उसके बाद समाज के सामूहिक दायित्व को व्यक्ति निर्माण कर्ता माना हैI स्पष्ट है कि दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन के केंद्र में सामूहिक दायित्व का स्थान विशेष महत्वपूर्ण हैI

मूल्यांकन व् निष्कर्ष -

दीनदयाल उपाध्याय के विचार दर्शन में महिला सशक्तिकरण और महिला अधिकारों के सम्बन्ध में अलग से व्याख्या और उनके विशेष विचार का न मिलना, बहुत से विद्वानों के लिए आलोचना का विषय बनता है कि दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय महिलाओं के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा, इसलिए वह महिला अधिकारों के पक्षधर नहीं थे या उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए कुछ नहीं लिखाI परन्तु दीनदयाल उपाध्याय के विचार दर्शन में, उनके विचारों के आधार का स्थान महत्वपूर्ण हैI जो अलग से किसी भी पक्ष के विचार की पैरवी नहीं करताI प्रत्येक पक्ष के महत्व को मानता है, यह अध्ययन से स्पष्ट हैI

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन का आधार विशुद्ध भारतीय है, और यह चिन्तन एकात्म मानव दर्शन या समग्र का चिन्तन हैI फिर दीनदयाल उपाध्याय अपने चिन्तन से अलग हटकर महिला सशक्तिकरण और अधिकारों का झंडा उठाकर क्यों चलते? दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय चिंतक के रूप में समाज के प्रत्येक पहलू का जो भी सूत्र दिया, उसमें समग्र और सामूहिक के कल्याण और हित का विचार हैI इसलिए यह कहना अनुचित होगा कि दीनदयाल उपाध्याय ने महिलाओं के हित का पक्ष नहीं रखाI दीनदयाल उपाध्याय ने तो मानव सृष्टि में महिला को प्रथम शिक्षिका और समाज के साथ मिलकर मानवीय मूल्यों की निर्माता के रूप में माना हैI दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की चिति या मौलिक धारणा को आत्मसात करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के आधार पर अपने विचार रखे हैं और जहाँ जरूरत हुई, वहां उन्होंने महिलाओं के हित की बात की हैंI वह चाहे मण्डन मिश्र की पत्नी का संवाद हो, जनसंघ में महिला शाखा की बात हो, अभावग्रस्त गाँव की महिलाओ के सपने को साकार करने की बात हो, अपनी मुहं बोली बहन सावित्री की भावनाओं की बात हो, या अपनी बीमार ममेरी बहन रमा देवी की सेवा की बात होI दीनदयाल उपाध्याय ने अपने कार्यों, विचार और व्यवहार में महिलाओं को कभी भी पुरुषों से कम नहीं आँका हैI उन्हें एक शक्ति के रूप में माना हैI

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि -

1. मोहन राव भागवत सुरेश जोशी सुरेश सोनी अनिरुद्ध देश पांडेय, हिंदुत्व सामाजिक समरसता मातृ शक्ति, सुरुचि प्रकाशन, 2015)
2. डा. संदीप कुमार पांडे, एकतममांववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्री विनायक पब्लिकेशन आगरा, 2025
3. विनायक वासुदेव नेने, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन पार्ट -2, सुरुचि प्रकाशन, 2025.
4. भालचंद्र कृष्णाजी केलकर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खंड-3 राजनीतिक चिन्तन, सुरुचि प्रकाशन नई दिल्ली, 2016.
5. महेश चन्द्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, 2021.

6. हरीश शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र जीवनी माला, डायमंड बुक पॉकेट, 2022.
7. अमरजीत सिंह, मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ, प्रतिभा प्रतिष्ठान, 2021.
8. विशवनाथ नारायण देवधर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन पार्ट-7, सुरुचि प्रकाशन, 2014.